'एसफोर्ड' भ्रमण एवं 'सृजन संगी' लोकार्पण

सर्जनात्मक सन्तुष्टि संस्थान के माध्यम से सूर्यनगरी जोधपुर में सृजन के क्षेत्र में कुछ वर्षों से कार्यरत हम नगर-निवासी कुछ मित्रों के मन में अभिलाषा थी कि नगर की सुविधाओं से दूर ग्रामीण क्षेत्र के बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए आरम्भ की गई संस्था — 'सोसाइटी फॉर रेशनल डवलपमेण्ट' के द्वारा ग्राम पीशावास में की जा रही गतिविधियों का वहाँ जाकर स्वयं अपनी आँखों से अवलोकन करें तथा इस प्रकार ग्रामीण बालकों के विकास हेतु किये जा रहे इस अभिनव प्रयोग में अपनी सहभागिता भी दर्ज करवाएँ। कहना आवश्यक न होगा कि जोधपुर जिले में ग्रामीण बालकों की शिक्षा व सर्वांगीण विकास को लेकर सरकारी व संस्थागत जितने भी कार्य किये जा रहे हैं, 'एसफोर्ड' उन सभी से कई मायनों में भिन्न तथा अनूठा प्रयोग है।

संस्थान के सदस्यों तथा उनके परिवारवालों के लिए किराये की एक बस लेकर हमने भ्रमण व सहभोज का कार्यक्रम आयोजित किया तथा 16 नवम्बर, 2003 को सुबह ठीक 9 बजे जोधपुर नगर से प्रस्थान किया। बस में संस्थान के सदस्यगण अपने बीवी-बच्चों समेत रवाना हुए। नगरीय परीवेश में पले कुछ बच्चों के लिए ग्रामीण संस्कृति से आज प्रथम साक्षात्कार होनेवाला था।

प्रथम पड़ाव विश्वविख्यात खेजड़ली ग्राम में हुआ जहाँ पर वृक्षों की रक्षा के लिए अमृता देवी बिश्नोई के नेतृत्व में 363 नर-नारियों ने पेड़ों को बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर इतिहास में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित कर लिया था। इस कथा से मारवाड़ का नाम सारे विश्व में रोशन हुआ है तथा पर्यावरण रक्षा की जब भी कहीं बात की जाती है यहाँ के बिश्नोई सम्प्रदाय के वीरों की यशोगाथा दोहराना आवश्यक समझा जाता है

खेजड़ली के शहीद स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए हम सभी की आँखें नम हो आईं। वहाँ के सुरम्य प्राकृतिक वातवरण में कूकती कोयलें, नाचते मयूर, कुलांचे भरते हरिण व स्वच्छन्द विचरते वन्य पशुओं को देखकर यह विश्वास दृढ़ हो गया कि यदि मानव अपना लालच छोड़कर प्रकृति तथा जीव-जन्तुओं के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार करते हुए रहना सीख जाये तो ही जगत् का वास्तविक कल्याण सम्भव है तथा ऐसे शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व से ही पृथ्वी से प्रदूषण समाप्त हो सकेगा। बच्चों ने अपने हाथों से चने, केले, गुड़ व रोटियाँ वन्य जीवों को खिलाकर आत्मिक आह्लाद की अनुभूति की।

खेजड़ली से हमारी बस बिरामी ग्राम के लिए रवाना हुई जहाँ पर छाजेड़ (जैन) सम्प्रदाय की कुलदेवी **भुवाल माता** का प्रसिद्ध मन्दिर है। **भुवाल माता माँ दुर्गा** का ही रूप हैं। वहाँ पर प्रतिवर्ष नवरात्रि पर बड़ा मेला लगता है जिसमें भाग लेने के लिए देशभर से छाजेड़ परिवार एकत्र होते हैं। मन्दिर की भव्यता, सफाई तथा सुचारु व्यवस्था ने हम सभी को मोह लिया। विशाल परिसर में बनी धर्मशाला इस बात की द्योतक थी कि यहाँ पर सैकड़ों तीर्थयात्रियों के भोजन व निवास की सुविधा भक्तजनों द्वारा उपलब्ध की गई है। हमने माँ के दर्शन किये, प्रसाद ग्रहण किया तथा पूजन में भाग लिया।

बिरामी से हमारी बस सजाड़ा ग्राम के लिए रवाना हुई जो लगभग 625 वर्ष पूर्व समाधिस्थ सन्त बाबा त्रिलोक भारती के समाधिस्थल की मिट्टी से घटित हो रहे चमत्कारों के कारण गत कुछ वर्षों से देशभर में विख्यात हो गया है तथा जहाँ भारत के कोने-कोने से रोगी भक्त पूर्ण श्रद्धा के साथ आकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं। ऐसा ज्ञात हुआ है कि कैंसर आदि असाध्य रोगों तथा पक्षाघात (लकवा) से पीड़ित मरीज़ों को भी यहाँ की धूनी की मिट्टी में लोटकर स्वास्थ्यलाभ मिला है। प्रेत-बाधाग्रस्त लोगों को भी अपने कष्टों से मुक्ति मिली है। इन कारणों से यह ग्राम एक बड़े तीर्थस्थल का रूप ग्रहण कर चुका है। यहाँ हर धर्म, सम्प्रदाय व जाति के पीड़ित मनुष्य लाखों की तादाद में पधार चुके हैं तथा प्रतिदिन हज़ारों यात्रियों की

देश, जाति, वर्ण, वर्ग, धर्म, सम्प्रदाय आदि की भिन्नताएँ बाहरी हैं। वस्तुतः मानव-मात्र में आन्तरिक एकता है। जिसे हृदय की आँखों से देखना है।

सौजन्य : श्री प्रतीक-श्रीमती संगीता नाहर, चार्टर्ड एकाउन्टेंट, जोधपुर

–श्री साँवलिया विहारीलाल वर्मा

आवाजाही से तम्बुओं का एक अस्थायी नगर-सा बस गया है। बाज़ार भी विकसित हो गया है जहाँ बाबा त्रिलोक भारती के जीवन व उनकी समाधि की महिमा का साहित्य व श्रव्य कैसेट्स आदि बड़े पैमाने पर बिक रहे हैं। हमलोगों ने जोधपुर में प्रतिवर्ष लगनेवाला स्वदेशी मेला कई बार देखा था जहाँ विदेशी वस्तुएँ व विदेशी पर्यटक भी देखे, परन्तु **सच्चे अर्थ में शुद्ध स्वदेशी मेले के दर्शन सजाड़ा में ही किये जहाँ भारत की ग्राम्य संस्कृति का ही चहुँओर बोलबाला था और था ग्रामीण श्रद्धालुओं का अन्तहीन समुद्र, जो आस्था के वशीभूत हर जगह से, हर साधन से, यहाँ पहुँच रहे थे।**

यहाँ से हमलोग अपने गन्तव्य 'एसफोर्ड परिसर' ग्राम पीशावास के लिए चले। विशाल भूभाग में स्थित छोटा-सा विद्यालय जो अभी बीज से अंकुरित होकर छोटे-से पौधे के रूप में विशाल वृक्ष का आकार ग्रहण करने को संकल्पित है। आज यहाँ पर स्वामी कृष्णानन्द मेमोरियल पुस्तकालय का उद्घाटन समारोह आयोजित है। डिस्कॉम के चेयरमैन श्री एच.डी. चारण के मुख्य आतिथ्य एवं जोधपुर केन्द्रीय कारागृह के अधीक्षक श्यामसुन्दर बिस्सा के सभापतित्व में एक छोटा-सा औपचारिक समारोह आयोजित था, परन्तु समारोह से पूर्व भोजन। जहाँ पर बिजली, पानी जैसी मूलभूत सुविधाएँ भी उपलब्ध न हों, वहाँ पर न केवल विद्यालय चलाना, अपितु समारोह के अवसर पर सौ-दो सौ लोगों के भोजन की भी शानदार व्यवस्था करना डॉ. सुनील नाहर जैसे धुन के धनी व्यक्ति के वश की ही बात हो सकती है। सब भूखे थे। सभी ने छककर सुस्वादु व्यञ्जनों का आनन्द लेते हुए प्रेमपूर्वक भरपेट भोजन किया।

> रेशनल डवलपमेण्ट और सजन या सर्जनात्मकता एक-दूसरे के पर्यायवाची ही है; क्योंकि सजन से ही विकास होता है और सही विकास सजन की क्षमता बढ़ाता है।

भोजन के पश्चात् पुस्तकालय का विधिवत् उद्घाटन सम्पन्न हुआ। पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों के विषयों की विविधता ने हमें आश्चर्यचकित कर दिया। ग्रामीण क्षेत्र में ज्ञान का इतना बड़ा भण्डार ? जबकि अभी तो यह शुरुआत ही है। हमने भी सर्जनात्मक सन्तुष्टि संस्थान की ओर से बाल-साहित्य की पुस्तकें भेंट की जिसके लिए 'एसफोर्ड' के नन्हें विद्यार्थियों की ओर से वहाँ के आचार्य भाई सन्दीपकुमार आचार्य ने आभार जताया। इसके बाद सभी ने वहाँ कक्षा-कक्षों, भोजनालय, रोपे गये (व प्रतिदिन सींचे जा रहे) वृक्षों के पौधों, प्रस्तावित गऊशाला स्थल आदि का अवलोकन किया और तत्पश्चात् **शामियाने के नीचे लगी शिल्प-प्रदर्शनी देखी जिसमें 'एसफोर्ड' के नन्हें कलाकारों ने अपनी अंगुलियों का स्पर्श देकर मिट्टी में प्राण फूँक दिये थे। सिद्धहस्त शिल्पियों के लिए स्पृहणीय इन कलाकृतियों में जैसे प्राण बस रहे थे।** सभी ने ग्रामीण बालकों के शिल्पकौशल की भूरि-भूरि प्रशंसा की। **बालक-बालिकाओं के नृत्य-संगीत के कार्यक्रम हुए जिनमें लोकजीवन की सजीव झलक दिखी।**

वहाँ पर एकत्र सभी अतिथियों ने अपने उद्बोधन में इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में इस प्रकार के अभिनव शिक्षण संस्थान के माध्यम से समाज में यह जो सेवाकार्य आरम्भ किया गया है, इसको सबकी सहायता से आर्थिक रूप से स्वावलम्बी इकाई के रूप में चलाया जाय और इसके लिए जनसहभागिता के प्रयास किये जायँ। **'सृजन संगी'** स्मारिका के लोकार्पण के साथ सर्जनात्मक सन्तुष्टि संस्थान व 'एसफोर्ड' का पारस्परिक जुड़ाव और स्पष्ट हो गया तथा दोनों ही संस्थाओं के अध्यक्ष डॉ. मोहनलाल पुरोहित ने यह ठीक ही फरमाया कि ''रेशनल डवलपमेण्ट और सृजन या सर्जनात्मकता एक-दूसरे के पर्यायवाची ही है; क्योंकि सृजन से ही विकास होता है और सही विकास सृजन की क्षमता बढ़ाता है।''

विद्वान् शिक्षक श्री किशनगोपाल जोशी ने इस बात पर बल दिया कि *'एसफोर्ड'* में शिक्षा पा रहे बच्चों के अभिभावक धन से नहीं तो श्रम से या साधनों से उसी प्रकार विद्यालय की सहायता करें जैसे प्राचीन समय में

श्रम में ही वह शक्ति है जो मिट्टी में से सोना उपजाती है। कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ किया जाने वाला श्रम ही अभावों और बेरोजगारी को समाप्त करके सर्वत्र खुशहाली लाता है।

सौजन्य : श्री महावीरसिंह चौहान, सह अभियन्ता, पी.एच.ई.डी., जोधपुर – ज्ञानकोश

गुरुकुलों की मदद ग्रामवासी किया करते थे। व्याख्याता श्रीमती मृदुला श्रीवास्तव ने कहा कि उन्हें यह देखकर बहुत खुशी हुई कि **यहाँ पर 'सन्-डे' नहीं मनाया जाता है और हर दिन काम का दिन होता है जिससे प्रमाद के लिए कोई स्थान नहीं बचता व बालक मेहनती बनते हैं।**

मुख्य अतिथि श्री हिंगलाजदान चारण ने वादा किया कि वे शीघ्र ही सरकार की ओर से यहाँ बिजली पहुँचाने की पूरी कोशिश करेंगे, ताकि बच्चे यहाँ पूरे समय रहकर सीख सकें। डॉ. अशोक बोहरा ने कहा कि उनके गुरु प्रोफेसर जे.के. व्यास (स्वामी कृष्णानन्दजी) का स्वप्न साकार हो सके, इसके लिए सभी के **समन्वित प्रयास की ज़रूरत** है। डॉ. सुनील नाहर ने विश्वास व्यक्त किया कि सबके सहयोग से **हम होंगे कामयाब एक दिन।**

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में विद्वान् वक्ता श्री श्यामसुन्दर बिस्सा ने बालकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि **''जिस प्रकार बीज में वृक्ष छिपा होता है उसी प्रकार बच्चों में विराट् ईश्वर का रूप होता है अपने भीतर छिपे ईश्वर का अन्वेषण करो और अनन्त विकास को प्राप्त करो। यही रेशनल डवलपमेण्ट है।''** उन्होंने आगे कहा कि "जहाँ डॉ. अशोक बोहरा, डॉ. सुनील नाहर जैसे संकल्पित व्यक्ति हैं, जिन्हें डॉ. एम.एल. पुरोहित का आशीर्वाद तथा श्री किशनगोपाल जोशी सरीखे कर्मठ लोगों का सहयोग प्राप्त है, वहाँ रेशनल डवलपमेण्ट तो अवश्य होगा ही। समय लग सकता है, लगेगा और भले ही कितना समय लग जाय, सफलता सिद्ध ही है।''

सर्जनात्मक सन्तुष्टि संस्थान से जुड़े हमसभी लोग एक सार्थक दिन बीतने की भावनात्मक सन्तुष्टि लेकर 'एसफोर्ड परिसर' से वापस लौटे तो हमारे कानों में ग्रामीण बालाओं के सुरीले लोकगीत गूँज रहे थे व हमारी आँखों के सामने थे नन्हें कलाकारों की नन्हीं अंगुलियों से बने सुन्दर-सुन्दर शिल्प।

✍ **अनिल अनवर**

(सम्पादक : *मरु गुलशन* त्रैमासिक)

सर्जनात्मक सन्तुष्टि संस्थान

33, व्यास कॉलोनी, एयरफोर्स, जोधपुर - 342011

सर्जनात्मक संतुष्टि संस्थान

मकर संक्रान्ति के पावन दिवस पर दिनांक 14 जनवारी, 2001 को राजस्थान की सुर्यनगरी जोधपुर में गठित सर्जनात्मक संतुष्टि संस्थान एक विशिष्ट प्रकार की अनूठी संस्था है जो माँ सरस्वती के उन साधक पुत्रों के सृजन को समाज के सम्मुख लाने के लिये प्रयासरत है जिनका सृजन स्वान्त: सुखाय है तथा जो व्यावसायिकता से अछूते रह कर धन व यश की कामना से निर्लिप्त, अपनी सर्जना में ही सन्तुष्टि प्राप्त कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त संस्थान इस बात के लिये भी प्रयासरत है कि बदलते नैतिक मूल्यों के इस तीव्र-गतिमान समय में बालकों व युवाओं को अपनी विरासत से कटने न दिया जाये तथा उनमें ललित कलाओं के प्रति अभिरूचि जागृत कर उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहभागी बना जाये। इन उद्देश्यों के साथ ही साथ समाज में स्वस्थ एवं मूल्यपरक साहित्य, संगीत, रंगकर्म, कला एवं अध्यात्म का प्रसार करना भी संस्था का लक्ष्य है।

मात्र संकल्प शक्ति के बल पर इस संस्था की नींव डाली गयी तथा जन्म से अब तक के पाँच वर्षों के काल में ही अपने कार्यक्रमों, प्रशिक्षण-शिविरों, गोष्ठियों, प्रकाशनों आदि के माध्यम से इस संस्था ने समाज में नैतिक व कलात्मक अभिरुचियों के उत्थान में उल्लेखनीय योगदान किया है तथा यह क्रम निरन्तर जारी है। संस्थान की त्रैमासिक पत्रिका 'मरु गुलशन' सम्पूर्ण देश में सैकड़ों साहित्यकारों तथा हजारों पाठकों से जुड़कर जनरूचि को संस्कारित करने का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। संस्थान द्वारा आयोजित प्रशिक्षण शिविरों से जुड़कर सैकड़ों बाल व युवा रंगकर्मी, गायक, वादक, नर्तक, कलाकार एवं कलात्मक छायाचित्रकार लाभान्वित हो चुके हैं। संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में पधार कर हजारों दर्शक व श्रोतागण आनन्दित हो चुके हैं। यही नहीं, संस्थान द्वारा निर्मित ग़ज़लों के ऑडियो कैसेट व श्रवण कर देश के हजारों ग़ज़ल प्रेमियों ने हमें साधुवाद भी दिया है।

मन में पवित्र संकल्प लेकर किया गया कोई भी शुभ कार्य किस प्रकार से फलीभूत होता है तथा 'मात्र सहयोग' के द्वारा साधन व धन जुट जाते हैं, यदि प्रयास में ईमानदारी व उद्देश्य में निष्ठा हो तो। यह संस्था न केवल पंजीकृत हुई, सैकड़ों सृजन-संगियों व हज़ारों पाठकों, श्रोताओं व दर्शकों के साथ जुड़ी, दर्जनों स्वान्त: सुखाय साधकों के कार्यक्रमों की प्रस्तुतियाँ देने में सफल हुई, आयकर की धारा 80 जी के अन्तर्गत दानदाताओं के लिये छूट पा सकी, प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से युवाओं व बालकों को सुसंस्कारित करने में योगदान दे सकी अपितु जन-जन के मन में अपना स्थान भी बना सकी। यह क्रम आज भी जारी है व आगे भी रहेगा क्योंकि हमें अपने उद्देश्यों की पवित्रता पर पूरी आस्था तथा अपने सदस्यों, सृजन-संगियों व जनसामान्य के सहयोग का पूरा भरोसा है। ●●●

सुगठित शरीर, आरोग्य और सौन्दर्य श्रम में ही छिपे होते हैं।

– ज्ञानकोश

सौजन्य : श्री महेन्द्र मेहता, चार्टर्ड एकाउन्टेंट, मुम्बई